E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

छतरपुर जिले के प्रमुख राजवंश

प्रकाश चंद चौरसिया
पी.एच.डी. शोधार्थी (इतिहास)
शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मुरैना (म.प्र.)

डॉ. जितेन्द्र शर्मा
प्राचार्य पं. श्यामाचरण उपाध्याय महाविद्यालय, जौरा खुर्द, मुरैना (म.प्र.)

Paper Rcevied date
05/05/2025
Paper date Publishing Date
10/05/2025
DOI
https://doi.org/10.5281/zenodo.15529315

IMPACT FACTOR
5.924

ABSTRACT

मध्यप्रदेश के बुन्देलखण्ड के छतरपुर जिले को बुन्देला शासकों ने नई पहचान व नाम दिया। यह क्षेत्र पाषाणकाल से ही आदि मानव की कार्य स्थली रहा है। चार बड़े महाजनपदों में से एक चेदि आधुनिक बुन्देलखण्ड (जिसमें छतरपुर जिला सम्मिलित है) का भाग था, जो आगे मगध साम्राज्य का अंग बना। मौर्य, शुंग, सातवाहन, कुषाण, गुप्तों के समय यह क्षेत्र, राजनीतिक, आर्थिक व धार्मिक गतिविधियों का केन्द्र रहा। सागर जिले का एरण समुद्रगुप्त का स्वभोग नगर बना। गुप्तोत्तर काल में कलचुरि का धार्मिक व राजनैतिक केन्द्र के रूप में विकास हुआ। चंदेल राजवंश, एक प्राचीन भारतीय राजपूत राजवंश था जिसने लगभग 9वीं से 13वीं शताब्दी के बीच बुन्देलखण्ड क्षेत्र पर शासन किया। यह राजवंश अपनी कला और वास्तुशिल्प, खासकर खजुराहों के मंदिरों के लिए जाना जाता है। चंदेल वंश की स्थापना नन्नुक ने 831 ई. के आसपास की थी। यह राजवंश मूल रूप से गुर्जर - प्रतिहारों के जागीरदार थे, लेकिन बाद में स्वतंत्र शासक बन गए। धीरे-धीरे, चंदेलो ने बुंदेलखण्ड क्षेत्र में अपना प्रभाव बढ़ाया और आसपास के क्षेत्रों पर भी शासन किया। बुंदेला राजवंश राजपूतों के गहरवार वंश से संबंधित था। बुंदेला शासकों ने बुंदेलखण्ड क्षेत्र में कई राज्यों की स्थापना की जिनमें ओरछा, पन्ना, और छतरपुर प्रमुख थे। बुंदेला शासकों ने मुगल शासकों के खिलाफ भी कई बार संघर्ष किया। उन्होने कला और संस्कृति को भी प्रोत्साहन दिया। बुंदेला राजवंश के महाराजा छत्रसाल ने बुंदेलखण्ड में स्वतंत्रता स्थापित करने के लिए मुगल साम्राज्य के खिलाफ लड़ाई लड़ी थी। छतरपुर की

स्थापना 1785 में हुई और इसका नाम छत्रसाल के नाम पर रखा गया। उनके वंशजों ने 1785 ई. तक राज्य पर शासन किया। छतरपुर जिला 1802 ई. में पेशवाओं के अधीन चला गया। बिटिश राज द्वारा 1806 ई में कुंवर सोने शाह को राज्य की प्रत्याभूति दी गई। आजादी के बाद पहले यह विंध्यप्रदेश का हिस्सा था तथा 01 नवम्बर 1956 को नये म.प्र. राज्य के पुनर्गठन के साथ ही छतरपुर जिले का भी निर्माण हुआ।

मध्यप्रदेश के बुंदेलखण्ड में स्थित छतरपुर जिले को बुंदेला शासकों ने नई पहचान व नाम दिया। यह क्षेत्र प्राचीन काल से ही महत्वपूर्ण रहा है। पुरातत्वीय सर्वेक्षण में कुछ स्थानों पर पुरा-पाषाण काल के औजार प्राप्त हुए है। इस जिले में स्थित राजनगर एवं खजुराहों से मध्य तथा उत्तर पाषाण युगों के औजार प्राप्त हुए है। (1) छतरपुर क्षेत्र 6वीं शताब्दी ई.पू. में चेदि जनपद का अंग था, जो चार महाजनपदों में से एक था। सम्राट अशोक के गुजर्रा (दतिया) एवं रुपनाथ (कटनी) के अभिलेख से ज्ञात होता है, कि यह भू-भाग मौर्य वंश के समय मगध का अंग था।

प्रयाग प्रशस्ति से हमें यह जानकारी प्राप्त होती है, कि समुद्रगुप्त (335-375 ई. सन्) ने मध्य तथा दक्षिणी भारत पर विजय प्राप्त कर एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की थी। समुद्रगुप्त ने इस क्षेत्र को अपने राज्य में मिला लिया और एरण (आधुनिक सागर जिला) को अपना स्वभोग नगर बनाया था। पांचवीं तथा छठी शताब्दी के समय चेदि प्रदेश पर परिब्राजकों तथा उच्चकल्प शासकों की शक्ति बढ़ी। माहिष्मती के कलचुरि 7वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में पहले कालिंजर क्षेत्र में स्थापित हुए और यहां से चेदि के शासक बने। आठवीं शताब्दी के मध्य में तीन प्रमुख राजवंशों अर्थात दक्षिण में राष्ट्रकूटो, गुर्जर देश में प्रतिहारों एवं बंगाल में पालों का उदय हुआ, जिनके मध्य भारत में अपनी प्रभुसत्ता की स्थापना के लिए लगभग दो शताब्दी तक संघर्ष चलता रहा। नौवीं शताब्दी की शुरुआत में जब कन्नौज पर प्रतिहार राजा नागभट्ट द्वितीय विराजमान था तब नन्नुक ने चेदि मंडल में राजवंश की स्थापना की थी। (2)

चंदेल राजवंश :-

भारत के मध्य भाग में स्थित बुन्देलखण्ड क्षेत्र में लगभग 9वीं से 13वीं शताब्दी तक शासन करने वाला एक प्रमुख राजपूत राजवंश था। खजुराहों से प्राप्त कुछ शिलालेखों के अनुसार नन्नुक (लगभग 831ई.) इस राजवंश का पहला शासक था। प्रतिहार वंशीय शासकों के समय में उनके सामंतो के रूप में नन्नुक, वाक्पति, जयशक्ति, विजयशक्ति, राहिल एवं हर्ष ही बुन्देलखण्ड में शासन करते रहे। इन प्रारंभिक शासकों में राजनैतिक दृष्टि से जयशक्ति, राहिल और हर्ष ही अधिक प्रभावशाली सिद्ध हो सके। जयशक्ति को चन्देल अभिलेखों में 'जैजा' या 'जैजाक' शब्द से भी संबोधित किया गया है। उसने अपने नाम पर ही अपने क्षेत्र का नाम " जैजाकभुक्ति" (जैजाक का प्रांत) रखा, जो बुन्देलखण्ड के चन्देल शासन काल में वर्षों तक प्रसिद्ध रहा। उसने अपनी पुत्री नट्टा देवी का विवाह कलचुरि शासक कोक्कल देव से करके अपनी राजनैतिक शक्ति को और अधिक मजबूत कर लिया था। (3)

चंदेल वंश का दूसरा प्रसिद्ध राजा राहिल हुआ। वह पराक्रमी, विजेता तथा कुशल निर्माता था। उसने महोबा में राहिल सागर बनवाया एवं राहिल गांव बसाया। महाकवि चंद्र भी उसकी प्रशंसा एक विजेता तथा अनेक नगर, दुर्ग एवं मंदिरों के निर्माता के रूप में करते है। (4) राहिल के पश्चात उसका पुत्र हर्षदेव (लगभग 910ई.) खजुराहों का शासक रहा। इसके शासन काल में चंदेलों की राजनीतिक शक्ति में वृद्धि हुई।

उत्कर्ष काल (यशोवर्मन लगभग 930ई.)

चंदेलो के राज्य विस्तार का श्रेय यशोवर्मन को दिया जाता है। उसने विशाल सेना का गठन किया। खजुराहों के संवत् 1011 के शिलालेख में उसे राजाओं के "कुल का भूषण" कहा गया। यशोवर्मन ने प्रतिहार नरेश देवपाल को हराकर अपने को स्वतंत्र किया तथा विष्णु की प्रतिमा को उससे छीनकर उसे खजुराहों में कलापूर्ण व श्रेष्ठ विष्णु मंदिर का निर्माण कराकर उसमें प्रतिस्थापित कराया। (5) यशोवर्मन के बाद उसका पुत्र धंगदेव (लगभग 950ई.) गद्दी पर बैठा। धंग को चंदेल वंश का सर्वप्रथम स्वतंत्रता का रक्षक भी माना जाता है। उसने खजुराहों में विश्वनाध मंदिर का निर्माण कराया, जो कलात्मकता की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। उसके शासन काल में उत्तर भारत के दो महत्वपूर्ण किले कालिंजर एवं ग्वालियर शामिल थे। धंगदेव के पश्चात उसका पुत्र गंडदेव शासक

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

बना। उसके शौर्य व पराक्रम को देखकर मुस्लिम इतिहासकारों द्वारा उसे आमीर(हम्मीर, महान वीर) कहा गया है।

गंडदेव के बाद उसका पुत्र विद्याधर (लगभग 1025ई.) में शासक बना। उसने एक शक्तिशाली संघ बनाया जिसके कारण महमूद गजनवी ग्वालियर एवं कालिंजर के किले को जीतने में असफल रहा। वह एक शक्तिशाली शासक था, जिससे चंदेलों की शक्ति में अत्यधिक वृद्धि हो गयी। कन्नौज के राजा राज्यपाल ने सुल्तान महमूद गजनवीं की अधीनता को स्वीकार कर लिया गया, जिस कारण विद्याधर ने राज्यपाल पर आक्रमण किया और उसका वध कर दिया। महोबा शिलालेख के अनुसार विद्याधर ने कन्नौज राज्य को तबाह कर दिया एवं भोज परमार तथा कलचुरि, शासक गांगेय देव को भी पराजित किया। (6)

विद्याधर की मृत्यु के बाद उसका पुत्र विजयपाल (लगभग 1035ई.) में शासक बना। विजयपाल के द्वारा राजनैतिक वृद्धि के वजाय शांतिप्रिय शासन में वृद्धि करने का प्रयत्न किया गया। विजयपाल के पश्चात उसका पुत्र देववर्मन (लगभग 1045 ई.) शासक बना तथा वह कलचुरी नरेश लक्ष्मीकर्ण से पराजित हो गया एवं कलचुरियों का सामंत बनकर रह गया। देववर्मन के बाद उसका भाई कीर्तिवर्मन (लगभग 1060ई.) शासक बना। कीर्तिवर्मन ने अपने भाई की पराजय का बदला कलचुरि शासक कर्ण देव को हराकर लिया। इस घटना का साहित्यिक साक्ष्य कृष्ण मित्र के प्रबोध चंद्रोदय से मिलता है।

उसने महोबा में कीर्ति सागर तथा चन्देरी नामक नगर की स्थापना की तथा जनरल कनिंघम को प्राप्त हुए शैव मंदिर का निर्माण भी इसी के द्वारा पूरा करवाया गया। (7) इसके बाद चन्देल वंश का वास्तविक पतन प्रारंभ हो गया तथा चन्देल उत्तराधिकारी इतने शक्तिशाली एवं कुशल न हो सके कि वे चन्देलों की सत्ता को अक्षुण बनाये रखें। अगला चंदेल शासक सुलक्षण वर्मन (लगभग 1100ई.) हुआ तथा इसके पश्चात उसका पुत्र जयवर्मन (लगभग 1110ई.) शासक बना, जिसकी जानकारी अजयगढ़ शिलालेख से होती है। जयवर्मन के पश्चात उसका चाचा पृथ्वीवर्मन (लगभग 1120ई.) गद्दी पर बैठा। पृथ्वी वर्मन के बाद उसका पुत्र मदनवर्मन (लगभग 1123 ई.) शासक बना, इसके शासन काल में एक बार पुनः राजसत्ता का सितारा चमका। विभिन्न भागों से प्राप्त हुए चंदेल शिलालेखों एवं मूर्तिलेखों की संख्या पूर्ववर्ती किसी भी शासक की अपेक्षा अधिक मिलने के कारण यह स्पष्ट है, कि वह किसी भी रूप में यशोवर्मन, धंग, गंड, विद्याधर और कीर्तिवर्मन

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

से किसी भी रूप में कम नहीं था। (8) मदनवर्मन के बाद उसका पुत्र यशोवर्मन द्वितीय (लगभग 1664ई.) चंदेल वंश का शासक था। संभवतः उसके अल्प समय के शासन के बाद उसका पुत्र परमर्दिदेव (लगभग 1165ई.) गद्दी पर बैठा। परमर्दिदेव को चव्हाण राजा के हाथो हार का सामना करना पड़ा, यह जानकारी हमें चंद्रवरदाई द्वारा रचित पृथ्वीराज रासो और जगनिक द्वारा रचित आल्हारासो से प्राप्त होती है।

अपने पिता परमर्दिदेव की मृत्यु के बाद त्रैलोक्य वर्मन गद्दी पर बैठा। उसके समय की जानकारी अजयगढ़ शिलालेख से मिलती है। त्रैलोक्य वर्मन के बाद उसका पुत्र वीरवर्मन (लगभग 1242 ई.) शासक बना। वीरवर्मन की मृत्यु के पश्चात उसका भाई भोजवर्मन (लगभग 1286ई.) गद्दी पर बैठा एवं उसके पश्चात हम्मीरवर्मन चंदेल शासक था। लेकिन इनके समय चन्देल सत्ता सिमटती ही चली गई एवं इन्होने अजयगढ़ के आसपास के क्षेत्र पर राज्य किया।

इस वंश का अंतिम शासक कीर्तिसिंह था, जो कालिंजर का शासक था। उसके साथ दिल्ली के शासक शेरशाह सूरी का युद्ध 1545 ई. में हुआ था। इस युध्द में दोनो ही मारे गये थे। कांलिंजर पर शेरशाह सूरी के पुत्र सलीम शाह का अधिकार हो गया था। गोंड रानी दुर्गावती चंदेल राजा कीरत सिंह की पुत्री थी। चंदेल राजाओं की राजनैतिक उपलब्धियां निश्चित ही महत्वपूर्ण है लेकिन उनकी स्थापत्यकला, मूर्तिकला तथा सांस्कृतिक क्षेत्र की उपलब्धियां उससे भी अधिक महत्वपूर्ण है। चन्देलों का सर्वश्रेष्ठ निर्माण खजुराहों के भव्य मंदिरों में देखने को मिलता है। खजुराहों के मंदिर नागरशैली के उत्कृष्ट उदाहरण है तथा वर्तमान में विश्व ऐतिहासिक धरोहर में सम्मिलित हैं।

बुन्देला राजवंश :-

चंदेल वंश के बाद बुन्देलखण्ड के वृहत क्षेत्र पर बुन्देलखण्ड के बुन्देला शासकों ने शासन किया। चंदेल राजवंश की पतनावस्था में विन्ध्य क्षेत्र में बुन्देलों का आविर्भाव एक ऐतिहासिक संयोग था। बुन्देला मूल रूप में कन्नौज के गहरवारों की एक शाखा है। चूंकि यह शाखा विन्ध्य क्षेत्र में थी, इसलिए विन्धयेला कहे गए जो बाद में बुंदेला कहलाये। बुन्देलखण्ड के पश्चिमी भाग पर सन् 1182 ई. से खंगार शासकों का शासन था। बुन्देलों को काशी के गहरवार नरेश वीरभद्र के पुत्र पंचम का वंशज माना जाता है। पंचम की मृत्यु के बाद वीर बुन्देला गद्दी पर बैठा तथा इसके

पश्चात इसका पुत्र करण शासक बना। (9) करण के पुत्र अर्जुनपाल ने 1313ई. में महौनी (जिला जालौन) को राजधानी बनाया। अर्जुनपाल के तीन पुत्र वीरबल, सोहनपाल एवं दयापाल थे । अर्जुनपाल की मृत्यु के बाद उसका ज्येष्ठ पुत्र वीरबल शासक बना जबकि सोहनपाल स्वयं राजा बनना चाहता था। 1182 ई. से ही खंगार शासकों का शासन बुंदेलखंड के पश्चिमी भाग पर था। मोहम्मद बिन तुगलक के समय सोहनपाल ने गढ़कुंडार को अपने अधिकार में ले लिया एवं उसके आठ वंशजों ने इस क्षेत्र के आसपास राज्य किया, 1531ई. तक गढ़कुंडार बुंदेला शासकों की राजधानी रही। 1531 ई. में इस वंश के शासक रुद्र प्रताप ने ओरक्षा को बुंदेलों की राजधानी बनाई।

रुद्र प्रताप के 12 पुत्र थे, जिनके नाम है- भारती चंद्र, मधुकरशाह, उद्‌याजीत, कीरतशाह, मुफ्तशाह, अमानदास, चंदनदास, दुर्गादास, घनश्याम, प्रागदास, भैरवदास एवं खांडीराय। (10) रुद्रप्रताप ने बुन्देलखण्ड के विभिन्न भागों की जागीरें अपनी मृत्यु के पहले ही अपने पुत्रों को दे दी थी। उसने भारती चन्द्र को ओरछा का शासक नियुक्त किया तथा उद्‌याजीत को महोबा की जागीर प्रदान की, जिसके वंशज चंपतराय और छत्रसाल हुए। भारतीचन्द्र (1531-54) एवं मधुकरशाह (1554-92) ने ओरछा में एक शक्तिशाली राज्य की स्थापना की। मधुकरशाह के समय मुगल - बुन्देला संघर्ष प्रारंभ हुआ। मधुकरशाह को मुगल अधीनता स्वीकार करना पड़ी। मधुकरशाह की मृत्यु 1592 ई. में हो गई तथा उसका पुत्र राम शाह शासक बना जो कमजोर शासक सिद्ध हुआ। 1605 ई. में जहांगीर के हस्तक्षेप के बाद राम शाह को चंदेरी एवं वीर सिंह देव को ओरछा का शासक बनाया गया। वीर सिंह देव के बाद उसका बड़ा पुत्र जुझार सिंह ओरछा का शासक बना। जुझार सिंह शंकालु प्रवृत्ति का था। मुगलों के षड्यंत्रो के कारण हरदौल की मृत्यु जहर खाने से हुई, जिस कारण जुझार सिंह विवादों से घिर गए। जहांगीर के समय जब शाहजहां ने विद्रोह किया था, जिसके दमन में वीर सिंह देव ने सहायता की थी।

शाहजहां जब मुगल बादशाह बना तो उसने ओरछा पर आक्रमण करवाया, जिस कारण जुझार सिंह को आत्मसमर्पण करना पड़ा, लेकिन महावत खांन की मध्यस्थता के कारण शाहजहां ने उसे क्षमा कर दिया तथा उसे महावत खांन के साथ दक्षिण अभियान पर भेजा। 1635ई. में वह महावत खाँ से अनुमति लेकर ओरछा वापस आ गया तथा साम्राज्य विस्तार के क्रम में उसने गोंड राजा प्रेम नारायण को मारकर चौरागढ़ पर अधिकार कर लिया। इसकी शिकायत प्रेमनारायण के पुत्र हिरदेशाह

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

ने शाहजहां से की। जुझार सिंह के सामने शाहजहां ने कुछ शर्ते रखी जिसका पालन उसने नहीं किया, जिस कारण शहजादे औरंगजेब के नेतृत्व में फिरोज जंग, खाने जहाँ एवं खान-ए-दौरान ने जुझारसिंह पर आक्रमण कर दिया तथा मुगलों ने 4 अक्टूबर 1635 को ओरछा पर अधिकार कर लिया । जुझार सिंह एवं उसका पुत्र विक्रमजीत जंगलो में चले गए जहां गोड़ों ने उनके सिर काटकर शाहजहां के पास भेज दिए।

शाहजहाँ ने जुझार सिंह की मृत्यु के बाद चंदेरी के देवी सिंह बुंदेला (1635ई. से 1637 ई.) को ओरछा का शासक नियुक्त किया, जिसे ओरछा की जनता ने स्वीकार नहीं किया तथा वह मात्र 2 वर्षों तक ही ओरछा की गद्दी पर बैठ सका। जनता के विद्रोह के कारण वह चंदेरी वापस लौट गया तथा ओरछा मुगल आधिपत्य में आ गया। इसके बाद चम्पतराय के नेतृत्व में मुगलों से संघर्ष हुआ। उदयाजीत के वंशज भगवत राय थे, चम्पतराय इन्हीं भगवत राय के पुत्र थे। इन्होने ओरछा के बुंदेला राजाओं को अपनी सेवाएं दी। चम्पत राय को रोकने के लिए शाहजहाँ ने फूट डालो और राज्य करो की नीति का सहारा लिया । जुझार सिंह के छोटे भाई पहाड़सिह को शाहजहां ने 3000 का मनसब दिया एवं 4 जून 1642 को ओरछा का शासक नियुक्त किया। (11) चम्पतराय ने पहाड़सिंह की नियुक्ति को स्वीकार कर लिया क्योंकि उनको राजा बनने की कोई महत्वाकांछा नहीं थी। पहाड़सिंह के मन में चम्पतराय के प्रति ईष्या बढ़ती गयी। चम्पतराय को पता था कि वे यदि पहाड़ सिंह का विरोध करेंगे तो बुंदेली एकता समाप्त हो जाएगी तथा शाहजहाँ की इच्छा पूर्ण हो जायेगी। अतः उन्होने दूरदर्शिता का उपयोग किया एवं मुगलों की सेवा में चले गए जहाँ उन्हे दारा शिकोह की सेवा में नियुक्त कर दिया गया। दारा शिकोह ने कंधार आक्रमण में चम्पतराय की सहायता से प्रसन्न होकर झाँसी के पास कौंच की जागीर प्रदान की। कुछ समय बाद इस जागीर को छीनकर पहाड सिंह को दे दी, जिस कारण चम्पतराय नाराज होकर अपनी पैतृक जागीर महेबा चले गए एवं वहां आसपास के क्षेत्रों में पुनः मुगलों का विरोध किया।

औरंगजेब के बादशाह बनने के पश्चात उसने चम्पतराय के विरुद्ध एक विशाल सेना भेजी, जिस कारण चम्पतराय एवं उनकी पत्नी लाल कुँवर को धंधेरों के पास जाकर शरण लेनी पड़ी। मुगल सेना ने धंधेरों को घेर लिया तथा चम्पतराय को मारने का प्रयास किया, लेकिन इसके पहले ही चम्पतराय एवं लाल कुँवर ने कटार घोपकर अपना जीवन समाप्त कर लिया। उनका बलिदान व्यर्थ

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

नहीं गया क्योकि बुन्देली एकता की जो मशाल चम्पतराय ने जलाई थी, उसको उनके महान पुत्र छत्रसाल ने प्रज्ज्वलित रखा।

चम्पतराय के चौथे पुत्र छत्रसाल ने पिता के बाद मुगलों को चुनौती दी। जिस तरह शिवाजी मुगलों के साथ संघर्ष कर रहे थे, उससे छत्रसाल भी प्रेरित हुए । छत्रसाल सौभाग्यशाली थे कि उन्हें मिर्जा राजा जयसिंह एवं शिवाजी से मिलने का अवसर प्राप्त हुआ। वे शिवाजी से अत्यधिक प्रभावित हुए तथा बुन्देलखण्ड वासियों को एक ऐसा वीर मिला जिसका स्मरण कर आज भी उनके मस्तक गर्व से ऊँचे हो जाते हैं। छत्रसाल ने बुंदेला जमीदारों, जागीरदारों तथा सामंतो की सहायता से मुगलों के विरुद्ध सेना तैयार की। छत्रसाल ने स्वामी प्राणनाथ को अपना गुरु बनाया । छत्रसाल की विजयों का उल्लेख करते हुए बाबा प्राणनाथ ने कहा था-

छत्ता तेरे राज में धक-धक धरती होय ।
जित जित घोड़ा मुख करें तित-तित फत्ते होय ॥ (12)

छत्रसाल ने 1671 ई. में अपना स्वतंत्रता संग्राम शुरु किया तथा मऊ (नौगांव के पास) के क्षेत्र पर कब्जा कर लिया। उन्होने धंधेरों पर आक्रमण किया तथा मुगलों के खिलाफ अभियान चलाकर बुन्देलखण्ड के सभी क्षेत्रों को अपने अधिकार में ले लिया। उन्होने पन्ना के गोंड राजा को पराजित करके पन्ना को अपनी राजधानी बनाया। छत्रपाल ने मऊ महोबा को अपनी सैनिक छावनी बनाया। उन्होने सागर, धमौनी तथा ग्वालियर के आसपास के क्षेत्रों को लूटा। जब छत्रसाल को मुगल सेनाओ के द्वारा घेर लिया गया तो उन्होंने मुगल प्रभुत्व को स्वीकार करना बेहतर समझा। परवर्ती मुगल शासकों के साथ छत्रसाल के संबंध अच्छे रहे। परंतु वृद्घावस्था में भी शायद छत्रसाल के जीवन में संघर्ष लिखा हुआ था, जिस कारण उन्हें इलाहाबाद के मुगल सूबेदार मोहम्मद खाँ बंगश से कड़ा संघर्ष करना पड़ा । जिसके कारण 1724 ई. में छत्रसाल को संधि करनी पड़ी। दिसम्बर 1728 ई. को बंगश ने महोबा जैतपुर के समीप फिर से आक्रमण किया तब छत्रसाल ने बाजीराव पेशवा से सहायता मांगी। बाजीराव को पत्र भेजकर छत्रसाल ने लिखा:-

'जो गत ग्राह गजेंद्र की, सो गत भई है आज, बाजी जात बुंदेल की, राखो बाजी लाज'।

बाजीराव ने बंगश पर भीषण आक्रमण किया। बंगश की छावनी को घेर लिया। छत्रसाल ने बंगश से संधि वार्ता शुरु की। वह शीघ्र ही सन्धि के लिए तैयार हो गया। बंगश ने छत्रसाल को यह

आश्वासन दिया कि, वह कभी श्री छत्रसाल के साम्राज्य की तरफ आँख उठाकर नहीं दखेगा। अतः छत्रसाल ने जैतपुर का घेरा उठा लिया एवं बंगश को सुरक्षित वापिस जाने का रास्ता प्रदान किया। छत्रसाल ने बाजीराव का सत्कार किया तथा एक बड़ी जागीर उन्हें सदा के लिए सौप दी। इसी अवसर पर संभवतः छत्रसाल ने युवा मस्तानी को भेंट स्वरुप बाजीराव को सौंप दिया। इसके बाद छत्रसाल ने अपने राज्य का विभाजन कर दिया।

इस तरह हम देखते हैं, कि छतरपुर जिले का एक भाग जगतराज को दिया गया जो राजा जैतपुर कहलाए तथा दूसरा भाग हिरदेशाह को मिला जो राजा पन्ना कहलाये। इसके अलावा पेशवा को तीसरा हिस्सा दिया, साथ ही उन्हें मस्तानी नामक एक सुन्दर नर्तकी भी भेंट की।i पेशवा की सहायता के बाद छत्रसाल ने मराठों का कभी भी विरोध नहीं किया। छत्रसाल की मृत्यु 4 दिसम्बर 1731 ई. को मऊ सहानिया (नौगांव के पास) में हुई यहां पर उनकी छतरी बनी हुई है। पेशवा ने शोक संवेदना व्यक्त करने के साथ ही हिरदेशाह को प्रत्येक स्थिति में हमेशा साथ देने का भरोसा दिया।

हिरदेशाह के बाद पन्ना का शासक सभासिंह को बनाया गया। इनके समय में राज्य की शक्ति का पतन होना प्रारंभ हो गया । सभासिंह की मृत्यु 1752ई. में हो गई। सभासिंह की मृत्यु के बाद पन्ना के राजा अमान सिंह बने। अमान सिंह को प्रजा अत्यधिक पसंद करती थी तथा वह एक लोकप्रिय शासक थे। उनका महत्वपूर्ण योगदान मन्दिरों एवं नगरों के निर्माण में रहा। अमान सिंह को कोई पुत्र नहीं था, जिस कारण उनके दो भाइयों हिन्दुपत एवं खेतसिंह में संघर्ष प्रारंभ हुआ। दीवान बेनी हजारी की सहायता से हिन्दूपत ने अमान सिंह को मौत के घाट उतार दिया एवं खेत सिंह को कारागार में डालकर उसकी हत्या करवा दी।

हिन्दूपत की मृत्यु के पश्चात उसका अवयस्क पुत्र अनिरुद्ध शासक बना लेकिन शासन संबंधी कार्य बेनी हजारी तथा खेमराज चौबे को दिए गए। इन दोनों की आपसी ईर्ष्या के कारण इस क्षेत्र में गृहयुद्ध की स्थिति उत्पन्न कर दी। अनिरुद्ध सिंह की मृत्यु के पश्चात इसके भाई सरनाथ सिंह एवं ढोकल सिंह के मध्य सत्ता के लिए संघर्ष हुआ, जिसमें ढोकल सिंह सफल हुआ। सरनाथ सिंह अपनी जागीर राजनगर लौट गया। सरनाथ सिंह की मृत्यु के बाद उसका अल्पवयस्क पुत्र हीरा सिंह शासक बना, जिसका संरक्षक कुवर सोनेशाह पंवार को बनाया गया। कुँवर सोनेशाह ने 1785

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

ई. में जागीर पर कब्जा कर लिया उसमें कुछ क्षेत्रों को शामिल करके छतरपुर रियासत की स्थापना की।

जगतराज जिसके तीन पुत्र थे, उसने उत्तराधिकारी के रूप में उसकी मृत्यु के पश्चात पौत्र गुमान सिंह को मनोनीत किया, जिसका विरोध उसके दो पुत्रों पहाड़ सिंह तथा वीर सिंह देव ने किया। गुमान सिंह ने अपने चाचा वीर सिंह देव को मतोंद परगना की जमीन प्रदान की। 1800ई. में चरखारी के पास हुई लडाई में सोनेशाह, वीर सिंहदेव तथा अन्य बुंदेलखण्ड सरदार अली बहादुर से हार गए। अलीपुरा क्षेत्र उस समय दीवान प्रताप सिंह के अधिकार में था, उसने भी अली बहादुर की अधीनता स्वीकार कर ली।

छतरपुर रियासत 1802ई. में पेशवाओं के अधीन चली गई। एवं 1803 ई. में बसई की संधि के पश्चात छतरपुर अंग्रेजों के हाथ में चला गया। 5 जून 1806 ई. को छतरपुर के राजा को अंग्रेजों द्वारा सनद प्रदान किया गया। सन् 1812 ई. में सोनेशाह ने अपनी संपत्ति अपने पांच पुत्रों, प्रताप सिंह, हिम्मत सिंह, पृथ्वी सिंह, हिंदूपत और बख्तसिंह के बीच बांट दी। (14) जबकि यह व्यवस्था की गई की भाइयों की मृत्यु हो जाने पर उनकी जागीरें फिर से रियासत में मिला ली जायेगी। सोनेशाह के पश्चात प्रताप सिंह गद्दी पर बैठा, वह एक कुशल शासक था । प्रताप सिंह 1832 ई. में चार वर्षों के लिए पन्ना रिसायत के शासक रहें।

जब 5 जून 1857ई० को प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की खबर नौगांव पहुंची तो उसी रात 12 वीं विंग के सैनिकों ने विद्रोह कर दिया। छतरपुर की रीजेन्ट रानी का गुप्त रूप से क्रान्तिकारियों को सहयोग प्राप्त होता रहा। उनकी सहायता से 1857 ई. में तात्यारोपे ने चरखारी पर आक्रमण कर दिया, जिसमें जैतपुर की रानी का भी सहयोग प्राप्त हुआ। क्रान्तिकारियों से प्रेरित होकर यहां के लोगों का स्वतंत्रता आंदोलन में सराहनीय योगदान रहा। सरदार वल्लभ भाई पटेल के नेतृत्व में जब 1947 ई. में रियासतों के एकीकरण का कार्य प्रारंभ हुआ तब 1948 ई. में विंध्यप्रदेश राज्य का निर्माण हुआ जिसमें बुंदेलखंड एवं बघेलखंड की रियासतें शामिल की गई। जब 1 नवंबर 1956 को नए मध्यप्रदेश का गठन हुआ तब छतरपुर जिला अस्तित्व में आया। (15)

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

संदर्भ सूची :-

1. इण्डियन आर्कोलाजी - ए रिव्यू 1955-56, पृ. 98
2. छतरपुर जिले का पुरातत्व, संचालनालय, पुरातत्व, अभिलेखागार, एवं संग्रहालय, मध्य प्रदेश भोपाल, पृ. 8
3. वर्मा, डॉ महेन्द्र, बुन्देलखण्ड की वास्तुकला, 2003, पृ. 37
4. पाण्डेय, अयोध्या प्रसाद, चंदेल कालीन बुंदेलखंड का इतिहास, हिंदी इतिहास सम्मेलन, प्रयाग, 1968, पृ. 23
5. चौधरी, प्राचीन भारत का राजनीतिक व सामाजिक इतिहास, पृ॰ 543
6. एपीग्राफिया इंडिका भाग-1, डायरेक्टर जनरल, आरक्योलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया, नई दिल्ली, पृ. 222, श्लोक 22
7. पूर्वोक्त, पाण्डेय, अयोध्या प्रसाद, पृ. 75
8. पूर्वोक्त, बुन्देलखण्ड की वास्तुकला, पृ. 42
9. श्रीवास्तव, डॉ. बृजेश कुमार, बुन्देलखण्ड का इतिहास (1531 से 1857 ई. तक), 2019, पृ.13
10. लाल कवि, 1903, छत्र प्रकाश, पृ॰ 11
11. गुप्त, 1992, बुन्देलखण्ड केसरी : महाराजा छत्रसाल बुन्देला, पृ. 8
12. तिवारी, 1990, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त इतिहास, पृ. 194
13. पूर्वोक्त, बुन्देलखण्ड का इतिहास (1531 से 1857 ई.), पृ. 57
14. पूर्वोक्त, छतरपुर जिले का पुरातत्व, पृ. 15
15. पूर्वोक्त, छतरपुर जिले का पुरातत्व, पृ. 16